इकोनॉमिक टाइम्स पुरस्कार समारोह में प्रधानमंत्री का भाषण

17 जनवरी, 2009

इस कार्यक्रम को मूलतः नवंबर में आयोजित किया जाना तय था, किंतु उसी माह मुंबई में हुए आतंकवादी हमलों के कारण इसे स्थगित करना पड़ा था। हालांकि उस घटना के तत्काल बाद मैंने कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी के साथ इस शहर का दौरा किया था, किन्तु उस समय जनता के समक्ष बोलने का कोई अवसर नहीं मिल पाया। इसलिए मैं इस अवसर पर उस दर्दनाक घटना के बारे में कुछ शब्द कहना चाहूंगा ।

हालांकि वह भयावह घटना बीत गई है, किन्तु उसके जख्म अभी शेष हैं। मैंने मुंबई में खुशहाली के तीन साल बिताए हैं और मैं मुंबईवासियों के दर्द और गुस्से को अच्छी तरह महसूस कर सकता हूँ । मुंबईवासियों से मैं सिर्फ यही कहूंगा कि भविष्य में इस शहर में ऐसा हमला दोबारा न हो, इस के लिए हम हर संभव प्रयास करेंगे ।

जिन लोगों की जानें गईं और जो लोग घायल हुए, उनके परिवार जनों के प्रति मैं समवदेना प्रकट करता हूँ । मैं, विशेष रूप से, मुंबई पुलिस और राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड के उन जवानों के साहस और बलिदान को नमन करता हूँ जिन्होंने इस हमले में आंतकियों से लोहा लेते हुए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए।

आगे बढ़ने से पहले, मैं आप लोगों से अनुरोध करता हूँ कि आप लोग अपने स्थान पर खड़े हो जाएं और इस त्रासदी के शिकार हुए लोगों के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए एक मिनट का मौन रखें ।

इस बर्बरतापूर्ण हमले के लिए मुंबई को चुनने के पीछे गहरी साजिश थी। यह हमारी राष्ट्रीयता पर हमला था ।

मुंबई उन्मुक्त, बहुवादी गतिशील और सार्वभौम भारत का सर्वोत्तम प्रतीक है, यही वजह है कि आंतकियों ने मुंबई पर हमला किया ।

किन्तु आंतकियों को यह समझना चाहिए कि विश्व का सभ्य समाज उनके खिलाफ है। उन्हें यह समझना चाहिए कि भारत के मूलभूत आदर्शों और इसके पंथ निरपेक्ष बहुलतावादी और जीवंत लोकतंत्र पर आक्रमण, सभी सभ्य राष्ट्रों पर आक्रमण है। उन्हें यह भी समझना चाहिए कि कोई भी राष्ट्र न तो इसे सहन कर सकता है और न ही इसे सहन करेगा ।

हमने इस आतंकी हमले से संबंधित अब तक जुटाए गए साक्ष्यों को पाकिस्तान और अन्य राष्ट्रों को सौंपा है । पाकिस्तान ने यह स्वीकार किया है कि गिरफ्तार आतंकवादी उनका नागरिक है ।

हम पाकिस्तान से उम्मीद करते हैं कि वह उन सभी के खिलाफ कार्रवाई करेगा जिन्होंने इन भयंकर अपराधों की साजिश रची, इसके लिए संसाधन जुटाए और इन्हें अंजाम दिया ।

पाकिस्तान सरकार ने यह घोषणा की है कि वह कुछ ही दिनों में अपने जांच परिणामों को सबके सामने पेश करेगी । मैं पाकिस्तानी प्राधिकारियों से आग्रह करता हूँ कि वे इस मामले से संबंधित सभी तथ्यों को ठीक-ठीक और संपूर्ण रूप से उजागर करें और तथ्यों से न तो इंकार करें, न ही उन्हें बदलें अथवा उन्हें छुपाएं ।

पाकिस्तान को चाहिए कि वह अंतरराष्ट्रीय कानून के अधीन अपने कर्तव्यो को पूरा करने, तथा सर्वोच्च स्तर पर अपने द्वारा किए गए द्विपक्षीय वचन बद्धता को निभाने के क्रम में अपने हित में लश्कर-ए-तैयबा और अन्य आतंकवादी संगठनों और उनके प्रायोजकों के खिलाफ कार्रवाई करें । उसे यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि मुंबई अथवा काबुल स्थित हमारे दूतावास में किए गए हमलों जैसी घटनाओं की पुनरावृत्ति भविष्य में न हो ।

इस हमले में सैकड़ो निर्दोष भारतीयों के साथ-साथ इक्कीस देशों के निर्दोष नागरिक भी मारे गए या घायल हुए । हम अंतरराष्ट्रीय समुदाय से यह अपेक्षा करते हैं कि वे इस मामले में पूरा दबाव बनाएं ताकि तेजी से जांच हो तथा इसके त्वरित और तार्किक निष्कर्ष निकले और पाकिस्तान से संचालित होने वाले आंतकवादी संगठनों को पूर्णतः समाप्त किया जाए । यदि पाकिस्तान अपने वचन के प्रति गंभीर है तो उसे अपनी कार्रवाइयों के माध्यम से यह साबित करना होगा कि वह व्यवहार के सभ्य मानदंडों पर इस प्रकार के हमले बरदाश्त नहीं करेगा ।

अंततः, मैं इस बात को स्वीकार करता हूँ कि यह एक ऐसी समस्या है जिसका समाधान हमें स्वयं अपने संसाधन और संकल्प के द्वारा करना होगा । हमें ऐसे हमलों से निपटने की अपनी योग्यता और इनके संबंध में अनुमान लगाने की हमारी आसूचना क्षमता को सुदृढ़ करना होगा । मुंबई में हुए हमलों से हमारी प्रणालियों की खामियों का पता चला और हम उन्हें दूर करने के लिए कार्य कर रहे हैं । हमलों के पश्चात हमने आतंकवाद का मुकाबला करने की अपनी योग्यता को बढ़ाने के लिए अनेक उपाय किए हैं । हमने आतंकवादी अपराधों से निपटने के लिए अपने कानूनों को कठोर बनाया है । हमने राष्ट्रीय जांच एजेंसी की स्थापना की है जिसका उद्देश्य मुख्यतः आतंकवादी अपराधों की जांच का समन्वय करना है ।

विभिन्न एजेंसियों से सूचनाओं की प्राप्ति और कार्रवाई के प्रयोजन से ऐसी सूचनाओं के विश्लेषण में सुधार लाया गया है । हमने तटीय रक्षा प्रणाली की योजना को भी अंतिम रूप दिया है जिसमें नौसेना की तो मुख्य भूमिका रहेगी, जबकि तटीय कमान सीधे तट रक्षक के अंतर्गत कार्य करेगा । नवीनतम प्रौद्योगिकी के जरिए आसूचना संग्रहण की क्षमता में सुधार लाने के लिए पहल की गई हैं ।

अब मैं इस बैठक की कार्यसूची पर आता हूँ ।

मैं, आज पुरस्कार प्राप्त करने वाले सभी लोगों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ । विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित व्यक्तियों और कंपनियों को दिए जाने वाले ये पुरस्कार उनके उच्च कार्य निष्पादन की क्षमता का परिचायक है । वे और उनके साथ कार्य करने वाली टीम हमारी सराहना और प्रशंसा के पात्र हैं, जिनके कारण यह उपलब्धि संभव हो सकी । हमें आशा है कि उनका प्रदर्शन दूसरों के लिए मार्गदर्शक का कार्य करेगा और वे इनकी उपलब्धियों का अनुसरण करेंगे और शायद उनसे भी आगे जा सकेंगे ।

तथापि मैं यह कहना चाहूंगा कि आगे आने वाले वर्ष में उच्चतर आर्थिक कार्य निष्पादन हासिल करना आसान नहीं होगा । दीर्घ समय से चले आ रहे दैदीप्यमान वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में अब संकट के बादल छाए हुए हैं।

अर्थ व्यवस्था और सभी सेक्टरों में अलग-अलग व्यापारों के लिए यह परीक्षा की घड़ी है ।

वर्ष 2008-09 के आरंभ होने से पहले ही हमें इस बात का पता था कि यह वर्ष औद्योगिक विश्व में मंदी का वर्ष होगा । हमें उस समय इस बात का पता नहीं था कि अमरीका में सब-प्राइम मर्टगेज लेंडिंग सेक्टर में वित्तीय कठिनाइयां, जो वर्ष 2007 में उभर चुकी थीं, वास्तव में एक वैश्विक वित्तीय संकट का रूप ले लेंगी और जिसके कारण एक ऐसी मंदी आएगी जिसका कुछ लोगों ने 1930 के दशक की व्यापक मंदी के बाद से सबसे गंभीर मंदी के रूप में उल्लेख किया है ।

अमरीका, यूरोप और जापान में अभी मंदी का दौर है और इसके कारण वर्ष 2009 की संपूर्ण अवधि के दौरान नकारात्मक विकास दर्ज किए जाने की आशंका है । वैश्विक वित्तीय बाजार में जोखिम का स्तर काफी ऊंचा बना हुआ है। उदीयमान बाजारों के लिए पूंजी के प्रवाह में भी गतिरोध उत्पन्न हो गया है ।

भारत पर ऐसे गंभीर वैश्विक संकट का प्रभाव पड़ना लाजिमी था और ऐसा हुआ भी। निर्यात मांग में काफी कमी आ गई है । स्टॉक बाजार तेजी से नीचे आया है और व्यक्तिगत

शेयर धारकों को हुए नुकसान के अतिरिक्त संपूर्ण विश्व में इसके कारण गंभीर वित्तीय कठिनाइयां उत्पन्न हुई हैं । वित्तीयन के पारंपरिक स्रोत खाली हो गए हैं ।

विश्व के औद्योगिक राष्ट्रों की सरकारें इस संकट के प्रति पूर्णतः जागरूक और गंभीर हैं और इस मंदी का मुकाबला करने के लिए अभूतपूर्व सुनियोजित कदम उठा रही हैं । हमारी सरकार ने भी वैश्विक मंदी का मुकाबला करने के लिए अनेक उपाय किए हैं हमने मौद्रिक नीति को लचीला बनाने के लिए अक्तूबर,2008 से क्रमबद्ध रूप से अनेक कदम उठाए हैं । हम बैंकों, विशेष रूप से सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को और अधिक मुक्त रूप से ऋण देने के लिए, प्रोत्साहित कर रहे हैं ताकि उत्पादक इकाइयां आर्थिक मंदी के अस्थायी दबाव से बाहर आ सकें । गैर वित्तीय कंपनियां, जो हमारी वित्तीय प्रणाली का अंग बन गई हैं, उन्हें भी व्यापक रूप से ऋण उपलब्ध करवाने की अनुमति दी गई है।

लघु एवं मध्यम उद्योग तथा गृह निर्माण एवं ऑटो मोबाइल क्षेत्रों के लिए भी ऋण उपलब्ध करवाने के लिए विशेष प्रयास किए गए हैं, जिन पर मंदी का विशेष प्रभाव पड़ा है।

मौद्रिक तथा ऋण नीति के क्षेत्र में उठाए गए इन कदमों के समर्थन में विदेश से वाणिज्यिक ऋण प्राप्त करने पर लगाए गए प्रतिबंधों में छूट देने के लिए कदम उठाए हैं।

हमने राजकोषीय नीति के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं ताकि अर्थ व्यवस्था को गति मिल सके । अनेक क्षेत्रों में कर की दरों में कमी की गई है । चालू वित्त वर्ष में अनेक योजनाओं में व्यय के लिए किए गए बजटीय प्रावधानों में पर्याप्त वृद्धि की गई है । यह वृद्धि मुख्यतः ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में अत्यावश्यक आधारभूत संरचना के विकास के उद्देश्य से की गई है ।

प्रतिस्पर्धी बोलियों पर आधारित सार्वजनिक-निजी क्षेत्रों की भागीदारी के जरिए आधारभूत संरचना का विकास करना हमारी नीति का महत्वपूर्ण अंग रहा है । परंतु इन परियोजनाओं को अब कठिन वित्तीयन परिवेश का मुकाबला करना होगा । इस समस्या से निपटने के लिए इंडिया इफ्रास्ट्रक्चर फाइनेंसिंग कंपनी लिमिटेड के जरिए पुनः वित्त पोषण हेतु एक नए तंत्र की स्थापना की घोषणा की गई है । इंडिया इफ्रास्ट्रक्चर फाइनेंसिंग कंपनी लिमिटेड प्रतिस्पर्धी बोली पर आधारित आधारभूत संरचना परियोजनाओं के लिए बैकों द्वारा उपलब्ध कराए गए दीर्घावधि ऋण के एवज में बैकों को कम लागत पर पुनः वित्त उपलबध कराएगा।

निर्यातकों पर भी वैश्विक मंदी का सीधा असर पड़ा है । हमने उनकी जरूरतों पर विशेष ध्यान दिया है । विविध निर्यात प्रोत्साहन योजनाओं को सुदृढ़ बनाया गया है और निर्यात ऋण सुविधाओं में वृद्धि की गई है ।

पिछले कुछेक सप्ताह में अनेक उपाय किए गए हैं जो कि अभूतपूर्व है । फिर भी मैं इस बात को स्वीकार करता हूँ कि इन उपायों से सभी समस्याओं का समाधान नहीं होगा। ऐसा इसलिए है कि घरेलू नीतिगत उपाय आज हमारे समक्ष विद्यमान गंभीर वैश्विक मंदी के दुष्प्रभावों से पूरी तरह से हमारी रक्षा नहीं करते । अधिक से अधिक हम इसके नकारात्मक प्रभावों को कम कर सकते हैं । हमारी सामान्य आर्थिक क्षमताएं पूर्णतः बहाल होंगी, परंतु ऐसा तभी होगा जब वैश्विक अर्थ व्यवस्था में सामान्य स्थिति बहाल हो जाएगी।

साथ ही चालू वर्ष की विकास दर पिछले वर्ष की तुलना में कम रहेगी । वर्ष 2008-09 के पूर्वार्द्ध में सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि की दर 7.7 प्रतिशत रही । इस वर्ष के उत्तरार्ध में यह काफी कम रहेगी । नवीनतम आकलन यह दर्शाता है कि वर्ष 2008-09 में अंतिम परिणाम 6.5 और 7 प्रतिशत के बीच रहेगा । यथार्थ आंकड़े चिंताजनक नहीं हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि भले ही विकास की दर कम है, परंतु अभी भी यह अधिकांश देशों की विकास दर से अधिक है । साथ ही हमारा कृषि क्षेत्र अच्छी प्रगति कर रहा है । मंदी की चुभन उन क्षेत्रों में महसूस की जा रही है, जहां पहले द्रुत गति से वृद्धि हुई थी । इससे दुख तो होना है, परंतु आशा है कि ये क्षेत्र अस्थायी कठिनाइयों से आसानी से उबर पाएंगे।

मैं इस बात पर भी बल देना चाहता हूँ कि चालू वर्ष में हमारी समस्याएं समाप्त नहीं होंगी । वर्ष 2009-10 में भी कठिनाई का यह दौर जारी रहेगा । अगले वर्ष भी सरकार प्रोत्साहनकारी वातावरण बनाने की दिशा में अपना प्रयास जारी रखेगी । इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए मौद्रिक और राजकोषीय नीतियां बनानी होंगी ।

खुशी की बात यह है कि मुद्रास्फीति की दर में पर्याप्त कमी आई है । अभी मुद्रास्फीति की दर 5.2 प्रतिशत है और इसमें और भी कमी आने की उम्मीद है । इससे मौद्रिक नीति के लिए लचीलापन मिलता है ।

राजकोषीय क्षेत्र में हमारे पास अधिक विकल्प नहीं हैं । चालू वित्त वर्ष में राजकोषीय घाटा मूल अनुमान से काफी अधिक रहेगा । इस घाटे को अनिश्चित काल तक सहन नहीं किया जा सकता । बावजूद इसके, हमें अगले वर्ष भी उच्च राजकोषीय घाटा सहन करना होगा ताकि हम अर्थ व्यवस्था को गति देने के लिए आवश्यक व्यय हेतु संसाधन जुटा सकें । ये व्यय मुख्यतः आधारभूत संरचना विकास और उन योजनाओं के लिए होने चाहिए जिनसे गरीब तबकों की आय में वृद्धि हो ।

कंपनी और लघु औद्योगिक क्षेत्रों के हमारे व्यावसायिक नेताओं को बाजार की इस कठिन और परिवर्तनशील परिस्थितियों के साथ सामंजस्य बिठाना होगा । मुझे विश्वास है कि वे इन चुनौतियों का सामना करेंगे ।

संकट की घड़ी अपने आपको पुन: स्थापित करने, कमजोरियों पर विजय पाने और वैश्विक उत्थान के साथ-साथ प्रगति के मार्ग पर पुन: अग्रसर होने का अवसर प्रदान करती है । अगले कुछ वर्षों में पुरस्कार विजेता वे ही लोग होंगे जिन्होंने संकट की इस घड़ी का सर्वोत्तम तरीके से मुकाबला किया होगा ।

अंततः मैं, सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की विख्यात कंपनियों में से एक कंपनी में हाल में हुई चिंताजनक घटना पर अपनी टिप्पणी करना चाहूँगा । सत्यम की घटना हमारे व्यापार जगत के लिए बदनुमा दाग है । इससे इस बात का पता चलता है कि किस प्रकार किसी एक कंपनी में की गई धोखाधड़ी और जालसाजी से बड़ी संख्या में लोग प्रभावित हो सकते हैं और व्यापक स्तर पर भारत की छवि को नुकसान भी पहुंच सकता है। सरकार इस जालसाजी के संपूर्ण तथ्यों का पता लगाने और इनमें शामिल लोगों को विधिवत कानूनी प्रक्रिया के तहत दंडित करने के लिए कृत संकल्प है ।

मैं भारतीय व्यापार जगत के नेताओं जिनमें से अनेक यहां मौजूद हैं, से यह आग्रह करता हूँ कि वे अपने कार्य-संचालन पर गहरी नजर रखें ताकि यह सुनिश्चित हो कि उनकी कार्य-प्रणाली सुचारू रूप से चल रही है और धोखाधड़ी संबंधी कार्यों को प्रभावी ढंग से रोकने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है ।

शेयरधारक, कामगार और अन्य पणधारियों के लिए व्यापारिक नेता और प्रबंधन विश्वास का केंद्र बिंदु हैं, उनके कार्य उनकी कंपनियों की प्रतिष्ठा से भी अधिक व्यापक रूप से उनके साख को प्रभावित करते हैं । भारतीय उद्योग के लिए उच्चतम मानक की स्थापना हेतु मैं आपका सहयोग चाहता हूँ ताकि समग्र विश्व यह कहे कि हम सत्यम घोटाले से दृढ़ता और अधिक विश्वसनीयता के साथ उभरकर आएं हैं ।

हम न:संदेह यह कर सकते हैं । अंत में मैं पुरस्कार विजेताओं को पुन: अपनी बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ ।

****